



INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान हाई कोर्ट चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी (4th ग्रेड)

(राजस्थान उच्च न्यायालय (जोधपुर))



भाग – 1

सामान्य हिंदी + अंग्रेजी

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स “राजस्थान हाई कोर्ट (चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी (4th ग्रेड)) परीक्षा” को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को राजस्थान हाई कोर्ट द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा “चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी भर्ती परीक्षा” में पूर्ण संभव मदद करेंगे।

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशक:

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : <http://www.infusionnotes.com>

WhatsApp Link- <https://wa.link/l5oubd>

Online Order Link - <https://shorturl.at/9NIFM>

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
<u>हिंदी</u>		
1.	संज्ञा	1
2.	सर्वनाम	4
3.	क्रिया	6
4.	विशेषण	8
5.	समास एवं समास - विग्रह	11
6.	संधि एवं संधि विच्छेद	24
7.	विलोम शब्द	36
8.	पर्यायवाची शब्द	48
9.	काल	57
10.	शब्द - शुद्धि	58
11.	वाक्य - शुद्धि	63
12.	मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ	68
13.	वाक्यांश के लिए एक सार्थक शब्द	79
14.	हिंदी वर्णमाला	91
ENGLISH		
1.	Time And Tense	94
2.	Active and passive Voice	102
3.	Direct & Indirect Narration	108
4.	Sentences: Simple, Compound, and Complex	113
5.	Use of Article	114
6.	Preposition	115

7.	<i>Correction of sentences</i>	124
8.	<i>Synonyms and Antonyms</i>	155
9.	<i>One Word Substitution</i>	168

अध्याय - 1

संज्ञा

संज्ञा की परिभाषा:-

- संज्ञा उस विकारी शब्द को कहते हैं, जिससे किसी विशेष वस्तु, भाव और जीव के नाम का बोध हो, उसे संज्ञा कहते हैं।
- दूसरे शब्दों में - किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, गुण या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।
- जैसे -** प्राणियों के नाम- मोर, घोड़ा, अनिल, किरण जवाहरलाल नेहरू आदि।
- वस्तुओं के नाम - अनार, रेडियो, किताब, संदूक, आदि।
- स्थानों के नाम - कुतुबमीनार, नगर, भारत, मेरठ आदि
- भावों के नाम - वीरता, बुढ़ापा, मिठास आदि
- यहाँ 'वस्तु' शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में हुआ है, जो केवल वाणी और प्रदार्थ का वाचक नहीं, वरन् उनके धर्मों का भी सूचक है।
- साधारण अर्थ में 'वस्तु' का प्रयोग इस अर्थ में नहीं होता। अतः वस्तु के अंतर्गत प्राणी, प्रदार्थ और धर्म आते हैं। इन्हीं के आधार पर संज्ञा के भेद किये गये हैं।

संज्ञा के भेद

संज्ञा के तीन भेद होते हैं-

- (1) व्यक्तिवाचक (Proper noun)
- (2) जातिवाचक (Common noun)
- (3) भाववाचक (Abstract noun)

(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा :- जिस शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे-

- **व्यक्ति का नाम** - रवीना, सोनियां गाँधी, श्याम, हरि, सुरेश, सचिन आदि।
- **वस्तु का नाम** - कर, टाटा चाय, कुरान, गीता, रामायण आदि।
- **स्थान का नाम** - ताजमहल, कुतुबमीनार, जयपुर आदि।
- **दिशाओं के नाम** - उत्तर, पश्चिम, दक्षिण, पूर्व।
- **देशों के नाम** - भारत, जापान, अमेरिका, पाकिस्तान, बर्मा।
- **राष्ट्रीय जातियों के नाम** - भारतीय, रूसी, अमेरिकी।
- **समुद्रों के नाम** - काला सागर, भूमध्य सागर, हिन्द महासागर, प्रशान्त महासागर।
- **नदियों के नाम** - गंगा, ब्रह्मपुत्र, बोल्ला, कृष्णा कावेरी, सिन्धु।
- **पर्वतों के नाम** - हिमालय, विन्ध्याचल, अलकनंदा, कराकोरम।
- **नगरों चोको और सड़कों के नाम** वाराणसी, गया, चाँदनी चौक, हरिसन रोड़, अशोक मार्ग।
- **पुस्तकों तथा समाचारों के नाम** - रामचरित मानस, ऋग्वेद, धर्मयुग, इण्डियन नेशन, आर्यावर्त।

- **ऐतिहासिक युद्धों और घटनाओं के नाम**- पानीपत की पहली लड़ाई, सिपाही-विद्रोह, अकूबर-क्रांति।
- **दिनों महीनों के नाम**- मई, अक्टूबर, जुलाई, सोमवार, मंगलवार।
- **त्योहारों उत्सवों के नाम**- होली, दीवाली, रक्षाबन्धन, विजयादशमी।

(2) जातिवाचक संज्ञा :- जिस शब्द से एक जाति के सभी प्राणियों अथवा वस्तुओं का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

- बच्चा, जानवर, नदी, अध्यापक, बाजार, गली, पहाड़, खिड़की, स्कूटर आदि शब्द एक ही प्रकार प्राणी, वस्तु और स्थान का बोध करा रहे हैं। इसलिए ये जातिवाचक संज्ञा हैं।
- जैसे -** लड़का, पशु-पक्षियों वस्तु, नदी, मनुष्य, पहाड़ आदि।
- 'लड़का' से राजेश, सतीश, दिनेश आदि सभी 'लड़कों' का बोध होता है।
- 'पशु-पक्षियों' से गाय, घोड़ा, कुत्ता आदि सभी जाति का बोध होता है।
- 'वस्तु' से मकान, कुर्सी, पुस्तक, कलम आदि का बोध होता है।
- 'नदी' से गंगा यमुना, कावेरी आदि सभी नदियों का बोध होता है।
- 'मनुष्य' कहने से संसार की मनुष्य-जाति का बोध होता है।
- 'पहाड़' कहने से संसार के सभी पहाड़ों का बोध होता है।

(3) भाववाचक संज्ञा:-

- थकान, मिठास, बुढ़ापा, गरीबी, आजादी, हँसी, चढ़ाई, साहस,
- वीरता आदि शब्द-भाव, गुण, अवस्था तथा क्रिया के व्यापार का बोध करा रहे हैं।
- इसलिए ये 'भाववाचक संज्ञाएँ' हैं।
- इस प्रकार-जिन शब्दों से किसी प्राणी या पदार्थ के गुण, भाव, स्वभाव या अवस्था का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे- उत्साह, ईमानदारी, बचपन, आदि। इन उदाहरणों में 'उत्साह' से मन का भाव है। 'ईमानदारी' से गुण का बोध होता है। 'बचपन' जीवन की एक अवस्था या दशा को बताता है। अतः उत्साह, ईमानदारी, बचपन, आदि शब्द भाववाचक संज्ञाएँ हैं। हर प्रदार्थ का धर्म होता है। पानी में शीतलता, आग में गर्मी, मनुष्य में देवत्व और पशुत्व इत्यादि का होना आवश्यक है। पदार्थ का गुण या धर्म प्रदार्थ से अलग नहीं रह सकता। घोड़ा है, तो उसमें बल है, वेग है और आकार भी है। व्यक्तिवाचक संज्ञा की तरह भाववाचक संज्ञा से भी किसी एक ही भाव का बोध होता है। 'धर्म, गुण, अर्थ और भाव' प्रायः पर्यायवाची शब्द हैं। इस संज्ञा का अनुभव हमारी इन्द्रियों को होता है और प्रायः इसका बहुवचन नहीं होता।

भाववाचक संज्ञाएँ बनाना:-

भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण जातिवाचक संज्ञा, विशेषण, क्रिया, सर्वनाम और अव्यय शब्दों से बनती हैं। भाववाचक संज्ञा बनाते समय शब्दों के अंत में प्रायः पन, त्व, ता आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

(1) जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा बनाना:-

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
स्त्री-	स्त्रीत्व	भाई-	भाईचारा

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
मनुष्य-	मनुष्यता	पुरुष-	पुरुषत्व, पौरुष
शास्त्र-	शास्त्रीयता	जाति-	जातीयता
पशु-	पशुता	बच्चा-	बचपन
दनुज-	दनुजता	नारी-	नारीत्व
पात्र-	पात्रता	बूढ़ा-	बुढ़ापा
लड़का-	लड़कपन	मित्र-	मित्रता
दास-	दासत्व	पण्डित-	पण्डिताई
अध्यापक-	अध्यापन	सेवक-	सेवा

(2) विशेषण से भाववाचक संज्ञा बनाना:-

विशेषण	भाववाचक संज्ञा	विशेषण	भाववाचक संज्ञा
लघु-	लघुता, लघुत्व, लाघव	वीर-	वीरता, वीरत्व
एक-	एकता, एकत्व	चालाक-	चालाकी
खट्टा-	खटाई	गरीब	गरीबी
गंवार	गंवारपन	पागल	पागलपन
बूढ़ा	बुढ़ापा	मोटा	मोटापा
नबाव	नबावी	दीन	दीनता, दैन्य
बड़ा	बड़ाई	सुंदर	सौंदर्य, सुंदरता
भला	भलाई	बुरा	बुराई
ढीठ	ढिठाई	चोंड़ा	चोंड़ाई
लाल	सरलता सारल्य	आवश्यकता	आवश्यकता
परिश्रमी	परिश्रम	अच्छा	अच्छाई
गंभीर	गंभीरता, गांभीर्य	सभ्य	सभ्यता
स्पष्ट	स्पष्टता	भावुक	भावुक
अधिक	अधिकता, आधिक्य	अधिक	अधिकता
सर्द	सर्दी	कठोर	कठोरता
मीठा	मिठास	चतुर	चतुराई
सफेद	सफेदी	श्रेष्ठ	श्रेष्ठता
मूर्ख	मूर्खता	राष्ट्रीय	राष्ट्रीयता
खोजना	खोज	सीना	सिलाई
जीतना	जीत	रोना	रुलाई
लड़ना	लड़ाई	पढ़ना	पढ़ाई
चलना	चाल, चलन	पीटना	पिट्टाई
देखना	दिखावा, दिखावट	समझना	समझ

सींचना	सिंचाई	पड़ना	पड़ाव
पहनना	पहनावा	चमकना	चमक
लूटना	लूट	जोड़ना	जोड़
घटना	घटाव	नाचना	नाच
बोलना	बोल	पूजना	पूजन
झूलना	झूला	जोतना	जुताई
कमाना	कमाई	बचना	बचाव
रुकना	रुकावट	बनना	बनावट
मिलना	मिलावट	बुलाना	बुलावा
भूलना	भूल	छापना	छापा, छपाई
बैठना	बैठक, बैठकी	बढ़ना	बाढ़
घेरना	घेरा	छींकना	छींक
फिसलना	फिसलन	खपना	खपत
रंगना	रंगाई, रंगत	मुसकारना	मुसकान
उड़ना	उड़ान	घबराना	घबराहट
मुड़ना	मोड़	सजाना	सजावट
चढ़ना	चढ़ाई	बहना	बहाव
मारना	मार	दौड़ना	दौड़
गिरना	गिरावट	कूदना	कूद
अंत	अंतिम, अंत्य	अर्थ	आर्थिक
अवश्य	आवश्यक	अंश	आंशिक
अभिमान	अभिमानि	अनुभव	अनुभवी
इच्छा	ऐच्छिक	इतिहास	ऐतिहासिक
ईश्वर	ईश्वरीय	उपज	उपजाऊ
उन्नति	उन्नत	कृपा	कृपालु
कुल	कुलीन	केंद्र	केंद्रीय
क्रम	क्रमिक	कागज	कागजी
किताब	किताबी	काँटा	कँटीला
कंकड़	कंकड़ीला	कमाई	कमाऊ
क्रोध	क्रोधी	आवास	आवासीय
आसमान	आसमानी	आयु	आयुष्मान
आदि	आदिम	अज्ञान	अज्ञानी
अपराध	अपराधी	चाचा	चचेरा
जवाब	जवाबी	जहर	जहरीला
जाति	जातीय	जंगल	जंगली
झगड़ा	झगड़ालू	तालु	तालव्य
तेल	तेलहा	देश	देशी
दान	दानी	दिन	दैनिक
दया	दयालु	दर्द	दर्दनाक
दूध	दुधिया,	धन	धनी, धनवान
धर्म	धार्मिक	नीति	नैतिक
खपड़ा	खपड़ल	खेल	खिलाड़ी
खर्च	खर्चीला	खून	खूनी
गाँव	गाँवर्स,	गठन	गठीला
गुण	गुण ,	घर	घरेलू
घमंड	घमंडी	घाव	घायल
चुनाव	चुनौदा, चुनावी	चार	चौथा

पश्चिम	पश्चिमी	पूर्व	पूर्वी
पेट	पेटू	प्यार	प्यारा
प्यास	प्यासा	पशु	पाशविक
पुस्तक	पुस्तकीय	पुरान	पौराणिक
प्रमाण	प्रमाणिक	प्रकृति	प्राकृतिक
पिता	पैतृक	प्रांत	प्रांतीय
बालक	बालकीय	बर्फ	बर्फीला
भ्रम	भ्रमक भ्रांत	भोजन	भोज्य
भूगोल	भौगोलिक	भारत	भारतीय
मन	मानसिक	मास	मासिक
माह	माहवारी	माता	मातृक
मुख	मुखिक	नगर	नागरिक
नियम	नियमित	नाम	नामी, नामक
निश्चिन्	निश्चित	न्याय	न्यायी
ना	नाविक	नमक	नमकीन
पाठ	पाठ्य	पूजा	पूज्य, पूणजि
पीड़ा	पीड़ित	पत्थर	पथरीला
पहाड़	पहाड़ी	रोग	रोगी
राष्ट्र	राष्ट्रीय	रस	रसिक
लोक	लौकिक	लोभ	लोभी
वेद	वैदिक	वर्ष	वार्षिक
व्यापार	व्यापारिक	विष	विषेला
विस्तार	विस्तृत	विवाह	वैवाहिक
विज्ञान	वैज्ञानिक	विलास	विलासी
विष्णु	वैष्णव	शरीर	शारीरिक
शास्त्र	शास्त्रीय	साहित्य	साहित्यिक
समय	सामयिक	स्वभाव	स्वाभाविक
सिद्धांत	सिद्धांतिक	स्वार्थ	स्वार्थी
स्वास्थ्य	स्वस्थ	स्वर्ण	स्वर्णिम
मामा	ममेरा	मर्द	मर्दाना
मैल	मैला	मधु	मधुर
रंग	रंगीन, रंगीला	रोज	रोजाना
साल	सालाना	सुख	सुखी
समाज	सामाजिक	संसार	सांसारिक
स्वर्ग	स्वर्गीय, स्वर्गिक	सप्ताह	सप्ताहिक
समुद्र	सामुद्रिक, समुद्री	संक्षेप	संक्षिप्त
सुर	सुरीला	सोना	सुनहरा
क्षण	क्षणिक	हवा	हवाई
लड़ना	लड़ाकू	भागना	भगोड़ा
अड़ना	अड़ियल	देखना	दिखाऊ
लूटना	लुटेरा	भूलना	भुलक्कड़
पीना	पियक्कड़	तैरना	तैराक
जड़ना	जड़ाऊ	गाना	गवैया
पालना	पालतू	झगड़ना	झगड़ालू
टिकना	टिकाऊ	चाटना	चटदर
बिकना	बिकाऊ	पकना	पका
अपना	अपनापन /अपनाव	मम	ममता / ममत्व

निज	निजत्व, निजता	पराया	परायापन
स्व	स्वत्व	सर्व	सर्वस्व
अहं	अहंकार	आप	आपा

3. क्रिया विशेषण से भाववाचक संज्ञा:-

मन्द- मन्दी;
दूर- दूरी;
तीव्र- तीव्रता;
शीघ्र- शीघ्रता इत्यादि।

4. अव्यय से भाववाचक संज्ञा:-

परस्पर - पारस्पर्य ;
समीप - सामीप्य;
निकट - नैकट्य;
शाबाश - शाबाशी;
वाहवाह - वाहवाही
धिक - धिक्कार
शीघ्र - शीघ्रता

समूहवाचक संज्ञा :- जिस संज्ञा शब्द से वस्तुओं के समूह या समुदाय का बोध हो, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- व्यक्तियों का समूह- भीड़, जनता, सभा, कक्षा; वस्तुओंका समूह- गुच्छ, कुंज, मण्डल, घोंद।

द्रव्यवाचक संज्ञा :- जिस संज्ञा से नाप-तौलवाली वस्तु का बोध हो, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।

- दूसरे शब्दों में- जिन संज्ञा शब्दों से किसी धातु, द्रव या पदार्थ का बोध हो, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।
- जैसे- तांबा, पीतल, चावल, घी, तेल, सोना, लोहा आदि।
- संज्ञाओं का प्रयोग संज्ञाओं के प्रयोग में कभी-कभी उलटफेर भी हो जाया करता है। कुछ उदाहरण यहाँ दिये जा रहे हैं-

(क) जातिवाचक : व्यक्तिवाचक- कभी-कभी जातिवाचक संज्ञाओं का प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञाओं में होता है। जैसे- 'पुरी' से जगन्नाथपुरी का 'देवी' से दुर्गा का, 'दाऊ' से कृष्ण के भाई बलदेव का, 'संवत्' से विक्रमी संवत् का, 'भारतेन्दु' से बाबा हरिश्चंद्र का और 'गोस्वामी' से तुलसीदासजी का बोध होता है। इसी तरह बहुत- सी योगसूत्र संज्ञाएँ मूल रूप से जातिवाचक होते हुए भी प्रयोग में व्यक्तिवाचक के अर्थ में चली आती हैं। जैसे- गणेश, हनुमान, हिमालय, गोपाल इत्यादि।

(ख) व्यक्तिवाचक : जातिवाचक- कभी-कभी व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक (अनेक व्यक्तियों के अर्थ) में होता है। ऐसा किसी व्यक्ति का असाधारण गुण धर्म दिखाने के लिए किया जाता है। ऐसी अवस्था में व्यक्तिवाचक संज्ञा जातिवाचक संज्ञा में बदल जाती है। जैसे- गाँधी अपने समय के कृष्ण थे; यशोदा हमारे घर की लक्ष्मी हैं; तुम कलियुग के भीम हो इत्यादि।



अध्याय - 3

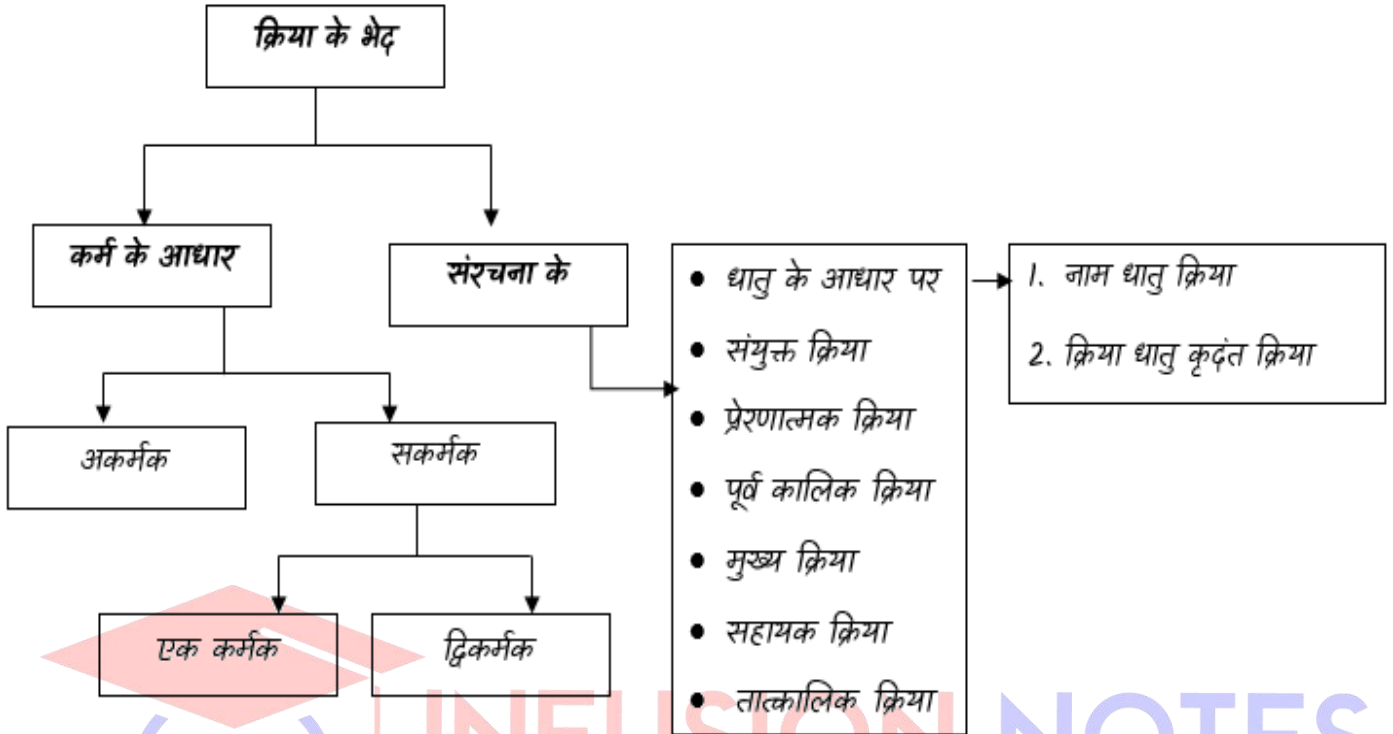
क्रिया

परिभाषा:- जिस शब्द से किसी काम का होना, करना, पाया जाये वह क्रिया कहलाती है।

नोट:- धातु को मूलतः क्रिया के मूल रूप को कहा जाता है अर्थात् क्रिया के मूलरूप को धातु कहते हैं।

क्रिया के भेद या प्रकार - (02)

क्रिया दो प्रकार की होती है या रचना या बनावट के आधार पर क्रिया दो प्रकार की होती है।



सकर्मक क्रिया:- जिस क्रिया में कर्म हो या कर्म के होने की संभावना हो और क्रिया का प्रभाव या फल सीधे कर्म पर पड़े तो या कर्म की संभावना पर पड़े तो वह सकर्मक क्रिया कहलाती है।

उदाहरण:- राम फल खाता है।

राम गाना गाता है।

राम पत्र लिखता है।

नोट :- उपर्युक्त वाक्यों में खाना, गाना, लिखना क्रियाओं का प्रभाव फल, गाना, पत्र कर्म पदों पर पड़ रहा है, क्योंकि इनके बिना क्रिया पूर्ण हो ही नहीं सकती, अतः ये सकर्मक क्रियाएँ हैं।

सकर्मक क्रिया की पहचान के लिए क्रिया से पहले “क्या” “किसको” लगाकर प्रश्न पूछा जाता है। और उसका कोई-न-कोई उत्तर अवश्य आता है। और वह उत्तर ही कर्म होता है। और वह क्रिया सकर्मक होता है।

सकर्मक क्रिया के भेद :-

1. **एक कर्मक क्रिया :-** जहाँ क्रिया एक क्रम के साथ होती है, उसे एक कर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे - मोहन खाना खाता है।

नीलम पुस्तक पढ़ती है।

2. **द्विकर्मक क्रिया :-** जहाँ क्रिया दो कर्म के बिना संभव नहीं हो सकती उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे :- राम ने श्याम को पुस्तक दी।

मैंने पुलिस को चोर पकड़वा दिया।

द्विकर्मक क्रिया वाले वाक्य में एक कर्म के आगे कर्म कारक का चिह्न “को” लगा रहता है। तथा दूसरे कर्म हम क्रिया के पहले “क्या” प्रश्न पूछकर जान सकते हैं।

जैसे - मैंने पुलिस को चोर पकड़वा दिया - पुलिस के आगे “को” कारक चिह्न लगा हुआ है। तथा “क्या” पकड़वा दिया ? प्रश्न का उत्तर होगा - चोर। अतः दूसरा कर्म - चोर है।

• **अकर्मक क्रिया:-** जिस क्रिया में कर्म न हो या क्रिया का फल या प्रभाव सीधे कर्ता पर पड़े तो उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।

उदाहरण - नरेश दौड़ रहा है।

बच्चा रोता है।

चिड़िया उड़ रही है।

दौड़ रहा है, उड़ रही है, रोता है - क्रियाओं के फल का प्रभाव क्रमशः नरेश, चिड़िया, और बच्चा कर्ता - पदों पर ही पड़ता है और ये क्रियाएँ बिना किसी कर्म के केवल कर्ता के द्वारा ही सम्पन्न हो सकती हैं।

Trick:- अगर काम खुद पर हो तो अकर्मक होगी

उदाहरण:- हंसना, जागना, रोना, सोना, नाचना, ओढ़ना, पिसना आदि।

क्रिया के अन्य भेद या प्रकार

- पूर्वकालिक क्रिया
- द्विकर्मक क्रिया
- संयुक्त क्रिया
- प्रेरणार्थक क्रिया
- सहायक क्रिया

पूर्वकालिक क्रिया:- जब कर्ता एक क्रिया को समाप्त करके दूसरी क्रिया प्रारम्भ करता है तो पहली क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं।

पहचान - कर, करके

उदाहरण - रीना खाना खाकर सो गयी।

दुष्पन्त पानी पीके सो गया।

राम पत्र लिखकर चला गया।

संयुक्त क्रिया:- जब कोई क्रिया दो क्रियाओं के संयोग से निर्मित होती है। तो वह संयुक्त क्रिया कहलाती है।

पहचान - जहाँ आवाज या ध्वनि में बल लगाना पड़े - जैसे जाने दो

उदाहरण:-

मैंने किताब पढ़ ली।

रीना खेलती-कूदती रहती है।

मोहन पढ़ता-लिखता रहता है।

दिव्या फोन कम्प्यूटर चलाती रहती है।

मुझे जाने दो

मुझे भगवान के लिए छोड़ दो।

प्रेरणार्थक क्रिया:- वे क्रियाएँ जिनसे यह पता चले कि कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी अन्य को कार्य करने के लिए प्रेरित करे वे प्रेरणार्थक क्रियायें कहलाती हैं।

धातु में आना तथा पाना

प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया - आना

द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया - पाना

उदाहरण:-

1. नरेश ने नाई से बाल कटवाए।

2. अमन ने पूजा से पत्र लिखवाया।

3. अनिल ने माली से दूब कटवाई।

सहायक क्रियाएँ:- सहायक क्रिया मुख्य क्रिया के साथ जुड़कर उसके अर्थ को स्पष्ट एवं पूर्ण करती हैं तो वह सहायक क्रिया कहलाती हैं।

सहायक क्रियाएँ:- हैं, हूँ, हे/था, थी, थे/ता, ती, ते/गा, गी, गो

उदाहरण :- वह स्कूल जाती है।

वह खाना खायेगा।

- **नाम धातु क्रियाएँ** - जो धातु संज्ञा या सर्वनाम विशेषण से बनती हैं। उसे नाम धातु कहते हैं

उदाहरण:-1. अमन ने मकान हथियाया।

2. लड़की बतियाई।

जैसे - हाथ-हथियाना, बात-बतियाना, गर्म-गर्माना, ठण्डा-ठण्डाना।

क्रिया-विशेषण

जो शब्द क्रिया के अर्थ में विशेषता प्रकट करते हैं, वे क्रिया विशेषण अविकारी शब्द कहलाते हैं।

- जैसे-
1. वह प्रतिदिन पढ़ता है।
 2. कुछ खा लो।
 3. मोहन सुन्दर लिखता है।
 4. घोड़ा तेज दौड़ता है।

इन उदाहरणों में प्रतिदिन कुछ सुन्दर, तेज शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट कर रहे हैं। अतः ये शब्द क्रियाविशेषण हैं। क्रिया-विशेषण के चार मुख्य भेद हैं-

- | | |
|------------------|----------------|
| (i) कालवाचक | (ii) स्थानवाचक |
| (iii) परिमाणवाचक | (iv) रीतिवाचक |

कालवाचक- जो क्रिया-विशेषण शब्द क्रिया के होने का समय सूचित करते हैं, उसे कालवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं।

- जैसे-
1. सीता कल आएगी।
 2. तुम अब जा सकते हो।
 3. दिन भर पानी बरसता रहा।
 4. तुम प्रतिदिन समय पर आते हो।

वाक्यों में कल, अब, दिनभर, दिन-प्रतिदिन शब्द क्रिया की काल सम्बन्धित विशेषता बतला रहे हैं अतः काल वाचक क्रिया-विशेषण हैं।

स्थानवाचक क्रिया-विशेषण- जो शब्द क्रिया के स्थान या दिशा का ज्ञान कराएँ उन्हें स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।

- जैसे-
1. वह पेड़ के नीचे बैठा है।
 2. तुम आगे चलो।
 3. हमारे आस-पास रहना।
 4. इधर-उधर मत भागो।

इन वाक्यों में आगे, आस-पास, नीचे, इधर-उधर, स्थानवाचक क्रिया विशेषण शब्द हैं। जो कि क्रिया की स्थान सम्बन्धी विशेषता बता रहे हैं।

परिमाण वाचक- जिन क्रिया-विशेषण शब्दों से क्रिया की अधिकता-न्यूनता आदि परिमाण का पता लगे अर्थात् नाप-तोल बतलाते हैं, वे परिमाण वाचक क्रियाविशेषण शब्द कहलाते हैं।

- जैसे-
1. उतना खाओ, जितना आवश्यक हो।
 2. कुछ तेज चलो।
 3. रमेश बहुत बोलता है।
 4. तुम खूब खेलो।

आदि उदाहरणों में उतना, जितना, कुछ, बहुत, खूब आदि परिमाण वाचक क्रिया-विशेषण अव्यय हैं।

रीतिवाचक क्रिया विशेषण - जिन क्रिया विशेषण शब्दों से क्रिया की रीति या विधि का पता चले उन शब्दों को रीतिवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं-रीतिवाचक विशेषण निम्न अर्थों में आते हैं-



अध्याय - 6

संधि एवं संधि विच्छेद

चन्द्रमुख	- चन्द्र के समान मुख (कर्मधारय)
चन्द्र के समान है मुख जिसका	- कार्तिकेय (बहुव्रीहि)
दशानन	- दस आनन (मुख) (द्विगु) दस मुख है जिसके अर्थात् रावण (बहुव्रीहि)
षडानन	- छः आनन (मुख) (द्विगु) छः मुख है जिसके अर्थात् कार्तिकेय (बहुव्रीहि)
लंबोदर	- लम्बा है जो उदर (कर्मधारय) लंबा है उदर (पेट) जिसका-गणेश (बहुव्रीहि)
महात्मा	- महान है जो आत्मा (कर्मधारय) महान है आत्मा जिसकी (बहुव्रीहि)
त्रिनेत्र	- तीन नेत्रों का समूह (द्विगु) तीन नेत्र है जिसके अर्थात् शिव (बहुव्रीहि)
चतुर्भुज	- चार भुजाओं का समूह (द्विगु) चार भुजाएं हैं जिसकी अर्थात् विष्णु (बहुव्रीहि)
चतुर्मुख	- चार मुखों का समूह (द्विगु) चार मुख है जिसके अर्थात् ब्रह्मा (बहुव्रीहि)

संधि

परिभाषा :- दो वर्णों के परस्पर मेल से उच्चारण और लेखन में जो परिवर्तन होता है उसे संधि कहते हैं अर्थात् प्रथम शब्द का अंतिम वर्ण और दूसरे का प्रथम वर्ण मिलकर उच्चारण और लेखन में जो परिवर्तन करते हैं। उसे संधि कहते हैं।

संधि - 1. आदेश :- किसी वर्ण के स्थान पर कोई दूसरा वर्ण आ जाये तो ,

जगत् + ईश = जगदीश

वाक् + ईश = वागीश

2. आगम - अनु+छेद = अनुच्छेद

च

3. लोप - अतः+एव = अतएव

4. प्रकृतिभाव - मनः+कामना = मनःकामना

संयोग - प्रथम शब्द का अंतिम वर्ण और दूसरे शब्द का प्रथम वर्ण मिलकर उच्चारण और लेखन में कोई परिवर्तन नहीं कर पाए तो उसे संयोग कहते हैं।

उदाहरण :- युग + बोध = युगबोध

संधि के भेद - संधि के तीन भेद होते हैं



स्वर संधि - दो स्वरों के परस्पर मेल को संधि कहते हैं।

स्वर संधि पाँच प्रकार की होती है :-

1. दीर्घ स्वर संधि
2. गुण स्वर संधि
3. वृद्धि स्वर संधि
4. यण् स्वर संधि
5. अयादि स्वर संधि

हिंदी में अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ऋ, कुल ॥ स्वर होते हैं।

1. **दीर्घ स्वर संधि -** यदि ह्रस्व या दीर्घ स्वर (अ, इ, उ) के बाद समान ह्रस्व (अ, इ, उ) या दीर्घ स्वर आये तो दोनों मिलकर दीर्घ हो जाते हैं।

उदा. अ/आ + अ/आ = आ

इ/ई + इ/ई = ई

उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ

(1). अ + अ = आ

अंत्य + अक्षरी = अंत्याक्षरी
अंध + अनुगामी = अंधानुगामी
अधिक + अंश = अधिकांश
अधिक + अधिक = अधिकाधिक
अस्त + अचल = अस्ताचल
आग्नेय + अस्त्र = आग्नेयास्त्र
उत्तर + अधिकार = उत्तराधिकार
उदय + अचल = उदयाचल
उप + अध्याय = उपाध्याय
उर्ध्व + अधर = उर्ध्वधर
ऊह + अपोह = ऊहापोह
काम + अयनी = कामायनी
गत + अनुगतिक = गतानुगतिक
गीत + अंजलि = गीतांजलि
छिद्र + अन्वेषी = छिद्रान्वेषी
जठर + अग्नि = जठराग्नि
जन + अर्दन = जनार्दन
तथ्य + अन्वेषण = तथ्यान्वेषण
तीर्थ + अटन = तीर्थाटन
दाव + अनल = दावानल
दीप + अवली = दीपावली
दाव + अग्नि = दावाग्नि
देश + अंतर = देशांतर
न्यून + अधिक = न्यूनाधिक
पद + अवनत = पदावनत
पर + अधीन = पराधीन
प्र + अंगन = प्रांगण
प्र + अर्थी = प्रार्थी
भग्न + अवशेष = भग्नावशेष

अ + आ = आ

आम + आशय = आमाशय
गर्भ + आधान = गर्भाधान
अन्य + आश्रित = अन्याश्रित
गर्भ + आशय = गर्भशय
आर्य + आवर्त = आर्यावर्त
फल + आहार = फलाहार
कंटक + आकीर्ण = कंटकाकीर्ण
छात्र + आवास = छात्रावास
कुश + आसन = कुशासन
जन + आकीर्ण = जनाकीर्ण
खग + आश्रय = खगाश्रय
जना + देश = जनादेश
गमन + आगमन = गमनागमन
भय + आक्रान्त = भयाक्रान्त
भय + आनक = भयानक
पित्त + आशय = पित्ताशय

धर्म + आत्मा = धर्मात्मा

भ्रष्ट + आचार = भ्रष्टाचार
मेघ + आलय = मेघालय
लोक + आयुक्त = लोकायुक्त
विरह + आतुर = विरहातुर
विवाद + आस्पद = विवादास्पद
शत + आयु = शतायु
शाक + आहारी = शाकाहारी
शोक + आतुर = शोकातुर
सत्य + आग्रह = सत्याग्रह
सिंह + आसन = सिंहासन
स्थान + आपन्न = स्थानापन्न
हिम + आलय = हिमालय
जल + आशय = जलाशय
पंच + आयत = पंचायत

आ + अ = आ

क्रिया + अन्वयन = क्रियान्वयन
मुक्ता + अवली = मुक्तावली
तथा + अपि = तथापि
रचना + अवली = रचनावली
दीक्षा + अंत = दीक्षांत
विद्या + अर्जन = विद्यार्जन
द्राक्षा + अरिष्ट = द्राक्षारिष्ट
श्रद्धा + अंजलि = श्रद्धांजलि
द्राक्षा + अवलेह = द्राक्षावलेह
सुधा + अंशु = सुधांशु
निशा + अंत = निशांत
द्वारका + अधीश = द्वारकाधीश
पुरा + अवशेष = पुरावशेष
महा + अमात्य = महामात्य

आ + आ = आ

कारा + आगार = कारागार
कारा + आवास = कारावास
कृपा + आकांक्षी = कृपाकांक्षी
क्रिया + आत्मक = क्रियात्मक
चिंता + आतुर = चिंतातुर
दया + आनंद = दयानंद
द्राक्षा + आसव = द्राक्षासव
निशा + आनन = निशानन
प्रेक्षा + आगार = प्रेक्षागार
प्रेरणा + आस्पद = प्रेरणास्पद
भाषा + आबद्ध = भाषाबद्ध
महा + आशय = महाशय
रचना + आत्मक = रचनात्मक
वार्ता + आलाप = वार्तालाप
श्रद्धा + आलु = श्रद्धालु

(2). इ / ई + इ / ई = ई

इ + इ = ई

अति + इत = अतीत
अति + इन्द्रिय = अतीन्द्रिय
अति + इव = अतीव
अधि + इन = अधीन
अभि + इष्ट = अभीष्ट
कवि + इंद्र = कविन्द्र
प्रति + इत = प्रतीत
प्राप्ति + इच्छा = प्राप्तीच्छा
मणि + इंद्र = मणीन्द्र
मुनि + इंद्र = मुनीन्द्र
रवि + इंद्र = रवीन्द्र
हरि + इच्छा = हरीच्छा

ई + इ = ई

फणी + इंद्र = फणीन्द्र
महती + इच्छा = महतीच्छा
मही + इंद्र = महीन्द्र
यती + इंद्र = यतीन्द्र
शची + इंद्र = सुधीन्द्र

ई + ई = ई

नदी + ईश्वर = नदीश्वर
नारी + ईश्वर = नारीश्वर
फणी + ईश्वर = फणीश्वर
मही + ईश = महीश
रजनी + ईश = रजनीश
श्री + ईश = श्रीश
सती + ईश = सतीश

इ + ई = ई

अधि + ईक्षक = अधीक्षक
अधि + ईक्षण = अधीक्षण
अधि + ईश्वर = अधीश्वर
अभि + ईप्सा = अभीप्सा
कपि + ईश = कपीश
क्षिति + ईश = क्षितीश
गिरी + ईश = गिरीश
परि + ईक्षित = परीक्षित
परि + ईक्षा = परीक्षा
प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा
प्रति + ईक्षित = प्रतीक्षित
मुनि + ईश्वर = मुनीश्वर
वारि + ईश = वारीश
वि + ईक्षक = वीक्षक
हरि + ईश = हरीश

दीर्घ संधि के अपवाद -

शक + अन्धु = शकंधु
कर्क + आन्धु = कर्कन्धु
पितृ + ऋण = पितृण
मातृ + ऋण = मातृण

(2). गुण स्वर संधि :-

अ / आ + इ / ई = ए
अ / आ + उ / ऊ = ओ
अ / आ + ऋ = अर्

नियम :-

1. यदि अ / आ के बाद इ / ई आए तो दोनों के स्थान पर 'ए' हो जाता है।
जैसे - अ / आ + इ / ई = ए
2. यदि अ / आ के बाद उ / ऊ आए तो दोनों के स्थान पर 'ओ' हो जाता है।
जैसे - अ / आ + उ / ऊ = ओ
3. यदि अ / आ के बाद 'ऋ' आए तो दोनों के स्थान पर 'अर्' हो जाता है।
जैसे - अ / आ + ऋ = अर्

अ + इ = ए

अंत्य + इष्टि = अंत्येष्टि
अल्प + इच्छा = अल्पेच्छा
इतर + इतर = इतरेतर
उप + दिष्टा = उपदेष्टा
कर्म + इन्द्रिय = कर्मेन्द्रिय
गज + इंद्र = गजेन्द्र
जित + इन्द्रिय = जितेन्द्रिय
देव + इंद्र = देवेन्द्र
न + इति = नेति
प्र + इषिति = प्रेषिति
भारत + इंद्रु = भारतेन्द्रु
भोजन + इच्छुक = भोजनेच्छुक
मम + इतर = ममेतर
मत्स्य + इंद्र = मत्स्येन्द्र
मानव + इतर = मानवेतर
मृग + इंद्र = मृगेन्द्र
योग + इंद्र = योगेन्द्र
वाच + इतर = वाचेतर
शब्द + इतर = शब्देतर
शुभ + इच्छा = शुभेच्छु
साहित्य + इतर = साहित्येतर
स्व + इच्छा = स्वेच्छा
हित + इच्छा = हितेच्छा

अ + ई = ए

अंक + ईक्षण = अंकेक्षण
अप + ईक्षा = अपेक्षा

श्रीमत् + शर्द् + चंद्र = श्रीमच्छरच्चंद्र

सत् + शासन = सच्छासन

सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र

सत् + शिक्षा = सच्छिक्षा

नियम :- (7) यदि 'इ' या 'उ' के बाद 'स' या 'थ' वर्ण आने पर 'स - ष' तथा 'त - ठ' में बदल जाता है।

उदाहरण -

अधि + स्थाता = अधिष्ठाता

अधि + स्थान = अधिष्ठान

अभि + सेक = अभिषेक

उपनि + सद् = उपनिषद्

नि + संग = निषंग

नि + सन्न = निषण्ण

नि + साद = निषाद

नि + सिद्ध = निषिद्ध

न + सेध = निषेध

नि + स्था = निष्ठा

नि + स्थुर = निष्ठुर

नि + स्नात = निष्णात

परि + सद = परिषद्

प्रति + सेध = प्रतिषेध

प्रति + स्था = प्रतिष्ठा

प्रति + स्थापना = प्रतिष्ठापन

प्रति + स्थित = प्रतिष्ठित

युधि + स्थिर = युधिष्ठिर

वि + सम = विषम

वि + साद = विषाद

वि + स्था = विष्ठा

अनु + संगी = अनुषंगी

अनु + स्थान = अनुष्ठान

सु + समा = सुषमा

सु + सुप्त = सुषुप्त

सु + स्मिता = सुष्मिता

नियम :- (8) यदि ऋ, ॠ, ॡ के बाद 'न' वर्ण आए तो 'न' 'ण' में बदल जाता है।

अपर + अह् = अपराह्

उत्तर + अयन = उत्तरायण

नारा + अयन = नारायण

नि + स्नात = निष्णात

परि + नत = परिणत

परि + नति = परिणति

परि + नय = परिणय

परि + णाम = परिणाम

परि + मान = परिमाण

प्र + आंगन = प्रांगण

प्र + आन = प्राण

प्र + नय = प्रणय

प्र + नत = प्रणत

प्र + नाम = प्रणाम

शूर्प + नखा = शूर्पणखा

नियम :- (9) 'स्वर + छ' की स्थिति होने पर 'च' वर्ण आगमन हो जाता है।

उदाहरण -

पद + छेद = पदच्छेद

अनु + छेद = अनुच्छेद

अप + छाया = अपच्छाया

आ + छन्न = आच्छन्न

आ + छादन = आच्छादन

छत्र + छाया = छत्रच्छाया

तरु + छाया = तरुछाया

परि + छेद = परिच्छेद

प्र + छवि = प्रतिच्छवि

प्रति + छाया = प्रतिच्छाया

वि + छेद = विच्छेद

स्व + छेद = स्वच्छेद

मातृ + छाया = मातृच्छाया

मुख + छाया = मुखच्छाया

शीतल + छाया = शीतालच्छाया

नियम :- (10) 1. यदि 'सम्' उपसर्ग के बाद 'कृ' धातु से बने (कृति , कृत , कर्ता , करण , कार , कार्य) आये तो वहाँ दंत्य 'स' का आगमन हो जाता है।

उदाहरण -

सम् + कृत = संस्कृत

सम् + करण = संस्करण

सम् + कृति = संस्कृति

सम् + कार = संस्कार

सम् + कार्य = संस्कार्य

2. यदि 'परि' उपसर्ग के बाद 'कृ' धातु से बने शब्द (कृत , कृति , कर्ता , कर , कार , कार्य) आये तो वहाँ मूर्धन्य 'ष' हो जाता है।

परि + कृत = परिष्कृत

परि + कृति = परिष्कृति

परि + कर्ता = परिष्कर्ता

परि + करण = परिष्करण

परि + कार = परिष्कार

परि + कार्य = परिष्कार्य

नियम :- (11). 1. निस् / दुस् + तालव्य 'स' आने पर आगे भी तालव्य 'स' का ही आगमन होता है।

उदाहरण -

दुस् + सह = दुस्सह

दुस् + साध्य = दुस्साध्य

दुस् + साहस = दुस्साहस

निस् + संकोच = निस्संकोच

निस् + संज्ञ = निस्संज्ञ
निस् + संदेह = निस्संदेह
निस् + सहाय = निस्सहाय
निस् + सार = निस्सार
निस् + सूत = निस्सूत

(2) दुस् / निस् + (च , छ , श) = दुस् / निस् के बाद च , छ , श वर्ण आने पर 'श' का आगमन हो जाता है।

उदाहरण -

दुस् + चरित्र = दुश्चरित्र
दुस् + शासन = दुश्शासन
दुस् + शील = दुश्शील
निस् + चय = निश्चय
निस् + चल = निश्चल
निस् + चिंत = निश्चिंत
निस् + चित् = निश्चित्
निस् + छल = निश्छल
निस् + शत्रु = निश्शत्रु

(3). दुस् / निस् के बाद यदि प / फ वर्ण आने के बाद 'ष' का आगमन हो जाता है।

उदाहरण -

दुस् + परिणाम = दुष्परिणाम
दुस् + पाच्य = दुष्पाच्य
दुस् + प्रचार = दुष्प्रचार
दुस् + प्रहार = दुष्प्रहार
निस् + फल = निष्फल
दुस् + पंक = निष्पंक
निस् + पक्ष = निष्पक्ष
निस् + पति = निष्पति
निस् + प्राण = निष्प्राण
निस् + पन्न = निष्पन्न
निस् + पलक = निष्पलक
निस् + पादन = निष्पादन
निस् + पाप = निष्पाप
निस् + प्रथ = निष्प्रथ

(3). विसर्ग संधि

परिभाषा :- विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन आने पर उनके मेल से जो विकार उत्पन्न होता है विसर्ग संधि कहते हैं।

जैसे - निः + आहार = निराहार

मनः + हर = मनोहर

नियम (1) :- यदि विसर्ग से पहले 'अ' हो तथा विसर्ग के बाद किसी भी तीसरा , चौथा , पाँचवा वर्ण (घोष वर्ण) अंतःस्थ वर्ण या ऊष्म वर्ण आए तो 'अ' और विसर्ग(ः) दोनों का 'ओ' हो जाता है।

उदाहरण -

अन्यः + अन्य = अन्योन्य

परः + अक्ष = परोक्ष

मनः + अनुकूल = मनोनुकूल

मनः + अनुभूति = मनोनुभूति

मनः + अनुसार = मनोनुसार

मनः + अभिलाषा = मनोभिलाषा

यशः + अभिलाषा = यशोभिलाषा

अधः + गति = अधोगति

अधः + भाग = अधोभाग

अधः + मुखी = अधोमुखी

अधः + वस्त्र = अधोवस्त्र

मनः + योग = मनोयोग

मनः + रंजन = मनोरंजन

मनः + विकार = मनोविकार

मनः + व्यथा = मनोव्यथा

मनः + विज्ञान = मनोविज्ञान

अंततः + गत्वा = अंततोगत्वा

अधः + भूमि = अधोभूमि

तपः + बल = तपोबल

तपः + भूमि = तपोभूमि

तपः + वन = तपोवन

तिरः + धान = तिरोधान

तिरः + भूत = तिरोभूत

तिरः + हित = तिरोहित

पयः + ज = पयोज

पयः + द = पयोद

पयः + धर = पयोधर

पयः + धि = पयोधि

पयः + निधि = पयोनिधि

पुरः + गामी = पुरोगामी

पुरः + हित = पुरोहित

मनः + ज = मनोज

मनः + दशा = मनोदशा

मनः + धारा = मनोधारा

मनः + बल = मनोबल

मनः + भाव = मनोभाव

मनः + मंथन = मनोमंथन

मनः + रथ = मनोरथ

मनः + रम = मनोरम

शिरः + धार्य = शिराधार्य

शिरः + भाग = शिरोभाग

नियम (2) :- यदि विसर्ग(ः) से पहले 'अ' को छोड़कर अन्य कोई स्वर तथा विसर्ग के बाद किसी भी वर्ण का तीसरा, चौथा, पाँचवा या अन्तस्थ वर्ण या कोई स्वर आए तो विसर्ग का 'र' हो जाता है।

- इः / ईः/उः + घोष व्यंजन = विसर्ग
- आयुः + वेद = आयुर्वेद
- आविः + भाव = आविर्भाव
- आविः + भूत = आविर्भूत

अध्याय - 8

पर्यायवाची शब्द

इसे प्रतिशब्द भी कहते हैं। जिन शब्दों के अर्थ में समानता होती है, उन्हें हम पर्यायवाची शब्द अथवा प्रतिशब्द कहते हैं। हिन्दी में तत्सम पर्यायवाची शब्द ही अधिक पाए जाते हैं जो संस्कृत से हिन्दी में आए हैं। हिन्दी में तद्भव पर्यायवाची शब्दों का अभाव है। कुछ प्रमुख पर्यायवाची शब्दों के उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं -

(अ)

शब्द	=	पर्याय
अमृत	=	पीयूष, सुधा, अमी
अंग	=	अवयव, भाग, हिस्सा, अंश, खंड।
अग्नि	=	आग, पावक, अनल, वहनि, हुताशन, कृशानु, वैश्वानर।
अनी	=	सेना, फौज, चमू, कटक, दल।
असुर	=	दनुज, दानव, दैत्य, राक्षस, निशिचर, निशाचर, रजनीचर।
अरण्य	=	जंगल, वन, कानन, विपिन।
अश्व	=	घोड़ा, वाजि, हय, घोटक, तुरग।
अंकुर	=	अँखुआ, कोपल, कल्ला, नवोद्भिद्।
अंचल	=	पल्ला, पल्लू, आँचल।
अंत	=	समाप्ति, अवसान, इति, उपसंहार।
अंत	=	फल, अंजाम, परिणाम, नतीजा।
शब्द	=	पर्याय
अचल	=	पर्वत, पहाड़, गिरि, शैल, स्थावर।
अचला	=	पृथ्वी, धरती, धरा, भू, इला, अवनी
अतिथि	=	अभ्यागत, मेहमान, पाहुना।
अधर	=	ओठ, ओष्ठ, लब, रद-पट, होंठ।
अनंग	=	कामदेव, मदन, मनोज, मयन, मन्मथ।
अनल	=	'अग्नि'।
अनाज	=	अन्न, धान्य, शस्य।
अनिल	=	हवा, वायु, पवन, समीर, वात, मरुत।
अनुकम्पा	=	कृपा, मेहरबानी, दया।
अन्वेषण	=	अनुसन्धान, खोज, शोध, जाँच।
अपना	=	निज, निजी, व्यक्तिगत।
अपर्णा	=	पार्वती, शिवा, उमा, भवानी, भैरवी
अपमान	=	तिरस्कार, अनादर, निरादर।
अप्सरा	=	देवांगना, सुरबाला, सुरनारी, सुरकन्या, देवबाला, देवकन्या।
अबला	=	नारी, गृहिणी, महिला, औरत, स्त्री
अभय	=	निर्भय, निर्भीक, निडर, साहसी।
अभिप्राय	=	तात्पर्य, आशय, मतव्य।

अँगुली	=	आँगुलिका, अँगुली, उँगली, दधिती, शक्वरी।
अँगूठी	=	अंगुली, अंगुलिका, अंगुलीय, छल्ला, छाप, मुँदरी, मुद्रिका।
अंकक	=	आमूल्यक, मूल्य - निरूपक, मूल्यांकक, मूल्यांकनकर्ता।
अंकुर	=	कलिका, कोपल, नवपल्लव, अँखुआ, अंगुसा।
अंगभू	=	अंगज, अंगभूत, आत्मज, तनय, धेवता, नंदन नकुल, सुअन, सुता।
अन्तरिक्ष	=	आकाश, उच्चाकाश, खमध्य, महाकाश, महाव्योम।
अंतर्धान	=	अदृश्य, ओझल, गायब, छूमंतर, तिरोभूत, तिरोहित, लुप्त।
अंदु	=	घुंघुर, झाँझ, नूपुर, पाजेब, पादांगद, पायल, बंधन, बेडी।
अंधकार	=	तम, तिमिर, अँधियारा, अँधेरा, रात, तमिस्र।
अंधा	=	चक्षुहीन, दृष्टिहीन, नेत्रहीन
अंश	=	अंग, अवयव, उद्धारण, घटक, चित्रांश, शरीर, सोपान, हिस्सा।
अकड़	=	अनम्य, अंहकार, घमंड, दंभ, दर्प, धृष्टता, हठ।
अकस्मात्	=	अचानक, एकाएक, सहसा
अकाट्य	=	अखंडनीय, अंदश्य, अनुल्लंघनीय, अभैव्य, स्वयंसिद्ध।
अकिंचन	=	दरिद्र, निर्धन, अगतिक, अनुपाय, असहाय, कंगाल, गरीब, अक्षकीलक, कीली, धुरा, धुरी।
अक्षत	=	अनुल्लंघित, अभिजित, अविभक्त, कामार्यवान।
अक्षय	=	अनंत, अमर, शाश्वत, अपरिवर्तनीय, सनातन।
अक्षुण्ण	=	अनष्ट, अभिजित, अमर, अविभक्त, अविभक्त, पवित्र।
अगाध	=	अमित, असीम, निस्सीम, अतुल, अकूत, अगणनीय।
अग्नि	=	अनल, अरुण, अशनि, आँच, आग, कृशानु, जातवेद, ज्वाला, दहन, धनजंय, पवि, पावक, रोहिताश्व, वहनि, वायुसुख, वैश्वानर, शिखी, समिध, छूतभुक, हुतवहा, हुताशन।
अग्राह्य	=	अपाच्य, निषिद्ध, अनाहार्य, अस्वीकार्य।
अचिर	=	अल्पजीवी, क्षणभंगुर, क्षणिक।



भरी गगरिया चुपके जाय	=	ज्ञानी गंभीर होता है।
भूखे भजन न होय गुपाला	=	भूखे रहने पर कोई काम नहीं हो सकता।
भैंस के आगे बीन बजाना	=	मूर्ख व्यक्ति को उपदेश देना निरर्थक होता है।
मन चंगा तो कठौती में गंगा	=	मन की पवित्रता ही महत्वपूर्ण है।
मेंढकी को जुकाम	=	मामूली आदमी द्वारा अपनी क्षमता का काम करने में भी नखरे करना।
योगी था सो उठ गया, आसन रही भभूत	=	पुरानी ख्याति समाप्त होना।
लंका में सब बावन गज के	=	एक से बढ़कर एक
शेखी सेठ की, धोती भाड़े की	=	ज्ञान / धन न होने पर भी बड़प्पन दिखाना।
समय पाय तरुवर फले	=	निरंतर परिश्रम करने से सही समय पर सफलता अवश्य मिलती है।
साँप छछूंदर की गति होना	=	दुविधा में पड़ना।
साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे	=	बिना किसी नुकसान के लक्ष्य प्राप्त करना।
सूत न कपास, जुलाहे से लट्टम लट्ट	=	बिना आधार कारण कारण किसी से झगड़ा करना।
हंसा था सो उड़ गया, कागा भया दीवान	=	भले लोगों के स्थान पर बुरे लोगों के हाथ में सत्ता अधिकार आना।
हथेली पर सरसों नहीं उगना	=	प्रत्येक कार्य बिना एक प्रक्रिया और समय के पूर्ण नहीं होता।
हाथ कंगन को आरसी क्या ?	=	प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं।
हाथी के दांत दिखाने के और, खाने के और	=	कथनी और करनी में अंतर

अध्याय - 13

वाक्यांश के लिए एक सार्थक शब्द

अच्छी रचना के लिए आवश्यक है कि कम से कम शब्दों में विचार प्रकट किए जाए। और भाषा में यह सुविधा भी होनी चाहिए कि वक्ता या लेखक कम से कम शब्दों में अर्थात् संक्षेप में बोलकर या लिखकर विचार अभिव्यक्त कर सके। कम से कम शब्दों में अधिकाधिक अर्थ को प्रकट करने के लिए 'वाक्यांश या शब्द-समूह के लिए एक शब्द' का विस्तृत ज्ञान होना आवश्यक है। ऐसे शब्दों के प्रयोग से वाक्य-रचना में संक्षिप्तता, सुन्दरता तथा गंभीरता आ जाती है। भाषा में कई शब्दों के स्थान पर एक शब्द बोल कर हम भाषा को प्रभावशाली एवं आकर्षक बनाते हैं।

कुछ वाक्यांशों के लिए एक शब्द -

'अ' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- जो सबसे आगे रहता हो - अग्रणी
- किसी आदरणीय का स्वागत करने के लिए चलकर कुछ आगे पहुँचना - अगवानी
- जिसकी गहराई या थाह का पता न लग सके - अगाध
- जो गाये जाने योग्य न हो - अगेय
- जो छेदा न जा सके - अछेद्य
- जिसका कोई शत्रु पैदा ही न हुआ हो - अजातशत्रु
- जिसे जीता न जा सके - अजेय
- जिसके खंड या टुकड़े न किये गये हों - अखंडित
- जो खाने योग्य न हो - अखाद्य
- जो गिना ना जा सके - अगणित/अनगिनत
- जिसके अंदर या पास न पहुँचा जा सके - अगम्य
- जिसके पास कुछ भी न हो - अकिंचन
- जिसमें कुछ करने की क्षमता न हो - अक्षम
- जिसका खंडन न किया जा सके - अखंडनीय
- जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा न हो - अगोचर
- दूर तक फैलने वाला अत्यधिक नाशक आग - अग्निकांड
- जिसका जन्म पहले हुआ हो - अग्रज
- जो किसी देन या पारिश्रमिक मदे पहले से ही सोचे - अग्रिम
- जो अंडे से जन्म लेता है - अंडज
- किसी कथा के अन्तर्गत आने वाली कोई दूसरी कथा - अंतकथा
- राजभवन के अंदर महिलाओं का निवास स्थान - अंतपुर
- मन में आप से उत्पन्न होने वाली प्रेरणा - अंतप्रेरणा
- अंक में सोने वाला - अंकशायी
- अंक में स्थान पाया हुआ - अंकस्थ
- मूलकथा में आने वाला प्रसंग, लघु कथा - अंतःकथा
- महल का वह भाग जहाँ रानियाँ निवास करती हैं - अंतःपुर
- धरती और स्वर्ग (आकाश) के बीच का स्थान - अंतरिक्ष
- मन में होने वाला स्वाभाविक ज्ञान - अंतर्ज्ञान
- जो सबके मन की बात जनता हो - अंतर्दामी



- वह विद्यार्थी जो आचार्य के पास ही निवास करता हो - **अंतवासी**
- जिसका जन्म निम्न वर्ण में हुआ है - **अंत्यज**
- अपने हिस्से या अंश के रूप में कुछ देना - **अंशदान**
- जिसको कहा न जा सके - **अकथनीय**
- जिसको काटा न जा सके - **अकाट्य**
- जिसके पास कुछ भी नहीं हो - **अकिंचन**
- जो पासे के खेल में कुशल हो - **अक्षधूर्त**
- जो क्षमा न किया जा सके - **अक्षम्य**
- जिसका खंडन ने किया जा सके - **अखंड / अखंडनीय**
- जो खाने योग्य न हो - **अखाद्य**
- जहाँ पहुँचा न जा सके - **अगम्य**
- जिसकी निंदा न की गई हो - **अगर्हित**
- जो बहुत घर हो - **अगाध**
- जो इंद्रियों (गो) द्वारा न जाना जा सके - **अगोचर**
- जो पहले जन्मा हो (बड़ा भाई) - **अग्रज**
- आगे का विचार करने वाला - **अग्रसोची**
- जिस पर चिंतन न किया गया हो - **अर्चित**
- जो अपने स्थान या स्थिति से अलग न किया जा सके - **अच्युत**
- प्रसूता (संतान को जन्म देनेवाली) को दिया जाने वाला भोजन - **अछवानी**
- जिसका जन्म न हो - **अज / अजन्मा**
- जो कभी बूढ़ा न हो - **अजर**
- जिसका कोई शत्रु न जन्मा हो - **अजातशत्रु**
- जिसको जीता न जा सके - **अजेय**
- जो कुछ नहीं जानता हो - **अज्ञ / अज्ञानी**
- जिसका पता न हो - **अज्ञात**
- जिसे जाना न जा सके - **अज्ञेय**
- जो अपनी बात से टले नहीं - **अटल**
- न टूटने वाला - **अटूट**
- जो अपनी जगह से न डिगे - **अडिग**
- अंड से जन्म लेने वाला - **अंडज**
- किसी बात पर व्यर्थ प्रलाप करना - **अतिकथा**
- मर्यादा का उल्लंघन करके किया हुआ - **अतिकृत**
- जिसके आगमन की तिथि निश्चित न हो - **अतिथि**
- आवश्यकता से अधिक बरसात - **अतिवृष्टि**
- किसी बात को अत्यधिक बढ़ाकर कहना - **अतिशयोक्ति**
- जिसका ज्ञान इंद्रियों के द्वारा न हो - **अतींद्रिय**
- जो व्यतीत हो गया हो - **अतीत**
- जो ऊँचा न हो - **अतुंग**
- शीघ्रता का अभाव - **अत्वरा**
- जिसकी गहराई का पता न लग सके - **अथाह**
- जिसका दमन न किया जा सके - **अदम्य**
- जिसे देखा न जा सके - **अदृश्य**
- जो पहले न देखा गया हो - **अदृष्टपूर्व**
- जो आज तक से संबंध रखता है - **अदयतन**
- जिसके बराबर दूसरा न हो - **अद्वितीय**

- जो ऋण लेता है (कर्जदार) - **अधमर्ण**
- जिस पर किसी ने अधिकार कर लिया हो - **अधिकृत**
- पहाड़ के ऊपर की (समतल) जमीन (टेबिल लैंड) - **अधित्यका**
- किसी पक्ष का समर्थन करने वाला वकील - **अधिवक्ता**
- वैधानिक सूचना जो सरकार द्वारा राजपत्र में प्रकाशित हो - **अधिसूचना**
- अध्ययन किया हुआ - **अधीत**
- नीचे की ओर मुख किया हुआ - **अधोमुखी**
- राष्ट्रपति / राज्यपाल द्वारा जारी आदेश/ सीमित अवधि का आदेश - **अध्यादेश**
- ज्ञात या कल्पित तथ्यों के आधार पर लिया गया निर्णय - **अध्याहरण**
- वह स्त्री जिसके पति ने दूसरा विवाह कर लिया हो - **अध्यूढा**
- जो बिना अंतर (गैप) के घटित हो - **अनंतर**
- अन्य से संबंध न रखनेवाला, किसी एक में ही आस्था रखने वाला - **अनन्य**
- जिसका कोई दूसरा उपाय न हो - **अनन्योपाय**
- जिसे किसी बात का पता न हो - **अनभिज्ञ**
- जिसके विषय में कोई ज्ञान न हो - **अनवगत, अज्ञात**
- जो सदा से चलता आ रहा है - **अनवरत / सनातन**
- जिसका कोई आदि / प्रारंभ न हो - **अनादि**
- कनिष्ठा (सबसे छोटी) और मध्यमा के बीच की ऊँगली - **अनामिका**
- जो दोहराया न गया हो - **अनावर्त**
- जो ढका हुआ न हो - **अनावृत / अपरिच्छिन्न**
- वर्षा का बिलकुल न होना - **अनावृष्टि**
- जिसे बुलाया न गया हो - **अनाहूत**
- वह सिद्धांत जो हर वस्तु को नश्वर मानता हो - **अनित्यवादी**
- पलक को झपकाए बिना - **अनिमेष, निर्निमेष**
- जिसका विरोध न हुआ हो या न हो सके - **अनिरुद्ध, अविरोधी**
- जिसका निवारण न किया जा सके / जिसे करना आवश्यक हो - **अनिवार्य**
- किसी के दुख से दुखी होकर उस पर दया करना - **अनुकंपा**
- जो अनुग्रह (कृपा) से युक्त हो - **अनुगृहित**
- किसी छोटे पर प्रसन्न होकर उसका उपकार करना - **अनुग्रह**
- किसी कार्य के लिए दी जाने वाली सहायता - **अनुदान**
- जिसकी उपमा न दी जा सके - **अनुपम**
- जिसका अनुभव किया गया हो - **अनुभूत**
- किसी मत या प्रस्ताव का समर्थन करने की क्रिया - **अनुमोदन**
- किसी संप्रदाय या सिद्धांत का समर्थन करने वाला - **अनुयायी**
- प्रेम उत्पन्न करने वाला - **अनुरंजक**
- वह व्यक्ति जो किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति आसक्त हो - **अनुरक्त**

Chapter - 1

Time And Tense

Time (समय) और Tense (काल) दोनों ऐसे शब्द हैं जिनमें संबंध होते हुए भी अंतर है।

Time का प्रयोग सामान्य अर्थ में होता है, जबकि Tense का प्रयोग विशेष अर्थ में Verb के form का निरूपण करने के लिए किया जाता है। चलिए नीचे दिए गए उदाहरणों पर हम लोग विचार करते हैं -

1. Veena goes to the market every Sunday.
2. The plane takes off at 5 p.m. tomorrow.
3. He had no money yesterday.

उदाहरण (1) में Simple Present Tense का प्रयोग किया गया है। लेकिन इससे Past, Present, और Future तीनों का बोध होता है, वीणा Past time में प्रत्येक रविवार को जाती है और आशा है कि Future time में भी प्रत्येक रविवार को जाएगी।

उदाहरण (2) में स्पष्ट होता है कि प्लेन (plane) कल 5 बजे शाम को प्रस्थान करेगा। इस वाक्य में भी Simple Present Tense का प्रयोग किया गया है, लेकिन इससे future time का बोध होता है।

उदाहरण (3) में Simple Past Tense का प्रयोग किया गया है, तथा इससे past time का बोध होता है। ऊपर दिए गए उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि Verb के Present Tense में रहने पर भी इस पर Present, Past और Future Time का बोध होता है।

अतः, Verb के Tense तथा इसके प्रयोग को सावधानी से समझने की जरूरत है सर्वप्रथम एक प्रश्न उठता है कि Tense क्या है? इस प्रश्न का उत्तर किस प्रकार है :

Tense : कार्य के समय के मुताबिक Verb के रूप में जो परिवर्तन होता है, उसे Tense कहते हैं।

Kinds of Tense

1. Present Tense (वर्तमान काल)
2. Past Tense (भूतकाल)
3. Future Tense (भविष्य काल)

1. **Present Tense :** किसी कार्य के वर्तमान समय में होने या करने, हो रहा है, हो चुका है, या हो गया है तथा एक लंबे समय से होता रहा है, का बोध हो तो उसे Present Tense कहते हैं।

दूसरे शब्दों में - An action which is done at the present time. जैसे -

1. I read a book
मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।
2. I am reading a book
मैं पुस्तक पढ़ रहा हूँ।

<https://www.infusionnotes.com/>

3. I have read a book

मैं पुस्तक पढ़ चुका हूँ।

4. I have been reading a book for an hour

मैं दो घंटे से पुस्तक पढ़ता रहा हूँ।

2. **Past Tense :** किसी कार्य के बीते हुए समय में होने या करने, हो रहा था, हो चुका था, या हो गया था तथा एक लंबे समय से होता रहा था का बोध हो, तो उसे Past Tense कहते हैं।

दूसरे शब्दों में- An action which is done at the Past time. जैसे -

1. I wrote a letter.
मैं पत्र लिखता था या मैंने पत्र लिखा।

2. I was writing a letter.
मैं पत्र लिख रहा था।

3. I had written a letter.
मैं पत्र लिख चुका था या मैंने पत्र लिखा था

4. I had been writing a letter for two days.
मैं दो दिनों से पत्र लिख रहा था

3. **Future Tense :** किसी कार्य के आने वाले समय में होने या करने, हो रहा होगा क्या होता रहे गा, हो चुका होगा या हो गया होगा तथा एक निश्चित समय से होता आ रहा होगा का बोध हो, उसे Future Tense कहते हैं। जैसे -

1. I shall write a letter.
मैं पत्र लिखूंगा।

2. I shall be writing later.
मैं पत्र लिख रहा हूंगा।

3. I shall have written a letter.
मैं पत्र लिख चुका हूंगा।

4. I shall have been writing a letter.
मैं पत्र लिखता आ रहा होऊंगा।

उपयुक्त उदाहरण से यह स्पष्ट होता है कि Present, Past तथा Future Tense के भी चार-चार उपभेद होते हैं।

1. Present Tense

Present Tense के चार उपभेद होते हैं।

1. Present Indefinite Tense / Simple Present Tense (सामान्य वर्तमान काल)
2. Present Continuous / Progressive Tense (अपूर्ण वर्तमान काल / तात्कालिक वर्तमान काल)
3. Present Perfect Tense (पूर्ण वर्तमान काल)
2. Present perfect continuous tense (पूर्णापूर्ण वर्तमान काल / पूर्ण तात्कालिक वर्तमान काल)

1. Simple Present Tense

Structure :

Positive:-

Subject + main verb + s/es + Object

Ex-Ram reads books.

Negative:-

Subject + do/does + not + main verb + Object

Ex- Ram does not read books.

Interrogative:-

1st type:-

Do/does + subj + not + main verb + Object + ?

2nd type :- WH words + 1st type

Ex- Does ram read books?

- यदि subject एकवचन (He, She, It, name) होगा तो main verb में s या es लगायेंगे और अगर subject बहुवचन (you, we, they) होगा तो main verb में s या es नहीं लगायेंगे।
- 1st person pronoun (I, We) के साथ Verb की 1st form आती है।

जैसे :-

ram reads books.

they read books.

Simple Present Tense का प्रयोग habitual, or regular or repeated action, Universal truth (नैसर्गिक सत्य) principal (सिद्धांत) permanent activities (स्थायी कार्य व्यापार), possession (अधिकार) को express (अभिव्यक्त) करने के लिए सुनियोजित कार्यक्रम (fixed programme) तथा सुनियोजित योजना (fixed plan) को (express) (अभिव्यक्त) करने के लिए किया जाता है।

1. **Mukesh goes to bed at 10 P.M.**
मुकेश रात 10 बजे सोने जाता है।
2. **She reads a newspaper every morning.**
वह हर सुबह अखबार पढ़ती है।
3. **He takes tea without sugar.**
वह बिना चीनी की चाय पीता है।
4. **Shweta and Anshu are girls.**
श्वेता और अंशु लड़कियाँ हैं।
5. **I get up at 6 a.m. every morning.**
मैं हर सुबह 6 बजे उठता हूँ।
6. **He always comes here at night.**
वह हमेशा रात को यहाँ आता है।
7. **He usually comes here at night.**
वह आमतौर पर रात को यहाँ आता है।
8. **He often comes here at night.**
वह अक्सर रात को यहाँ आता है।

9. **He never comes here at night.**

वह कभी रात को यहाँ नहीं आता।

10. **The sun rises in the east.**

सूरज पूर्व दिशा में उगता है।

11. **Two and two makes four.**

दो और दो चार होते हैं।

12. **Man is mortal.**

मनुष्य नश्वर है।

13. **Water boils at 100°C.**

पानी 100 डिग्री सेल्सियस पर उबलता है।

14. **This pen belongs to me.**

यह पेन मेरा है।

15. **I have a car.**

मेरे पास एक कार है।

16. **The college reopens in October.**

कॉलेज पुनः अक्टूबर को खुलेगा।

17. **He goes to Chennai next month.**

वह अगले महीने चेन्नई जाएगा।

18. **She leaves for New York next Monday.**

अगले सोमवार को न्यूयॉर्क के लिए प्रस्थान करेगी।

19. **The prime minister comes here tomorrow.**

प्रधानमंत्री कल यहाँ आएंगे।

20. **My brother returns tomorrow.**

मेरा भाई कल लौटेगा।

- यदि वाक्य if, when, before, after, till, until, unless, as soon as, as long as, in case से स्टार्ट होते हैं, तो इनके साथ Simple Present Tense का प्रयोग होता है। तथा Principal Clause के साथ Simple Future Tense का प्रयोग होता है -

Ex - **If you run fast, You will win the race.**

यदि तुम तेज दौड़ोगे, तो तुम रेस में जीत जाओगे।

When he comes here, he will help me.

जब वह यहाँ आएगा वह मेरी मदद करेगा।

Unless she works hard, she will not succeed.

यदि वह कठिन परिश्रम नहीं करेगी, वह सफल नहीं हो पाएगी।

Here or There से स्टार्ट होने वाले exclamatory sentence में Simple Present Tense का प्रयोग होता है जैसे -

Here comes they !

There goes the bus!

- आंखों देखा हाल का प्रसारण (मैच, आयोजन, कार्यक्रम, नाटक, फिल्म, सीरियल आदि) रेडियो या टेलीविजन के द्वारा करने के लिए Simple Present Tense का प्रयोग होता है जैसे -

2. Negative Sentences (नकारात्मक वाक्य):

- I had not completed the project.
मैंने परियोजना पूरी नहीं की थी।
- He had not met me before.
वह मुझसे पहले नहीं मिला था।
- They had not received the message.
उन्हें संदेश नहीं मिला था।

3. Interrogative Sentences (प्रश्नवाचक वाक्य):

- Had you completed your homework?
क्या तुमने अपना होमवर्क पूरा कर लिया था?
- Had she gone to school?
क्या वह स्कूल गई थी?
- Had they informed the teacher?
क्या उन्होंने शिक्षक को सूचित कर दिया था?

4. Interrogative Negative Sentences (नकारात्मक प्रश्नवाचक वाक्य):

- Had you not called me before?
क्या तुमने मुझे पहले फोन नहीं किया था?
- Had she not seen the result?
क्या उसने परिणाम नहीं देखा था?
- Had he not eaten anything?
क्या उसने कुछ खाया नहीं था?

याद रखें:

- "Had" हर subject (I, you, he, she, it, we, they) के साथ आता है।
- इसमें हमेशा क्रिया का तीसरा रूप (V³) लगता है।
- Past Perfect Tense का प्रयोग अक्सर **Past Indefinite Tense** से पहले की क्रिया बताने के लिए किया जाता है। जैसे:

Example:

- I had eaten dinner before he came.
मैंने खाना खा लिया था, उसके आने से पहले।

4. Past Perfect Continuous Tense

Affirmative:-

Subject + had been + V₁ + ing + other words + since / for

Negative :-

Subject + had + not + been + V₁ + ing + -----

Interrogative :-

1st type :- Had + subject + been + V₁ + ing + ---

2nd type :- Wh words + 1st type

Uses:- ऐसे कार्यों की अभिव्यक्ति के लिये जो भूतकाल में किसी विशेष समय तक जारी था !

Translate :-

1. It had been raining heavily since morning.
2. वे सुबह से इस मुद्दे पर वाद विवाद कर रहे थे !
They had been arguing on this topic since morning.
3. उस समय मे प्रधानाचार्य से अपने भविष्य के बारे में सलाह ले रहा था !
At that time I consulting/taking advice from the principal.

Future tense

1. Future Indefinit Tense:-

हिन्दी पहचान - सामान्यतः हिन्दी वाक्यों के अंत में गा, गी, गे आदि शब्द आते हैं।

Adverbials - Tomorrow, Next + day / night / week / month / year / any time, in future Etc.

Helping verb - इस Tense में तथा We के साथ Shall तथा अन्य कर्ताओं के साथ Will का प्रयोग करते हैं।

Main verb - इस tense में M.V. की 1st Form का प्रयोग करते हैं।

Simple Sentences:-

Formula - Subject + Shall / Will + M. V 1st + Object + Etc.

Ex -

1. कल हम वैष्णो देवी मंदिर जाएंगे।
We Shall go to the temple of Vaishno Devi.
2. तुम इस कक्षा के प्रतिनिधित्व कर्ता बनोगे।
You will be the representative of this class.
3. वह मेरा इंतजार करेगा।
He will wait for me.

Negative Sentences:-

Formula - Subject + Shall / Will + Not M.V 1st + Object + Etc.

Ex -

1. वे टीम में नहीं खेलेंगे।
They will not play with the team.
2. तुम इस घर में नहीं रहोगे।
you will not live in this house.

Interrogative Sentences:-

(A) Will / Shall + Subject + M.V 1st + Object + Etc.?

(B) Wh Word + Will / Shall + Subject + M.V 1st + Object Etc. ?

Ex -

1. वह खाना कहाँ खाएगा ?
Where will he eat food ?
2. क्या तुम मेरी सहायता करोगे ?
Will you help me ?

For Natural thing afferting us-

1. Too + Adjective is replaced by 'So + Adjective + that.
2. Now 'we / one' is added as Pronoun.
3. Too + vl is replaced by can not/could not + vl.
4. Now the Sentence is given its Proper structure.

Ex:-

(a) The Sun is too hot to go out.

- The sun is so hot that we cannot go out.

(b) The Night was too dark to se.

- The Night was so dark that we could not see.

Comparison of adverbs

Adjective की तरह adverb की भी तीन degrees होती हैं - positive, Comparative and the Superlative degree

अधिकतर वो adverb जो ly से end होते हैं वो comparative degree बनाते हैं more के साथ और superlative बनाते हैं most के साथ जैसे :-

positive	comparative	superlative
Happily	more happily	most happily
Kindly	more kindly	most kindly
Loudly	more loudly	most loudly
Noisily	more Noisily	most Noisily

Noun

'किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, गुण, कार्य या अवस्था के नाम को Noun (संज्ञा) कहा जाता है।

A noun is a word for a person ,place or thing or idea.

'हर वो वस्तु जिसका नाम हो जिसे हम देख सकते हो, महसूस कर सकते हो ,छु सकते हो noun कहलाता है

जैसे :-

किसी person(व्यक्ति) का नाम :- boy ,rita etc.

Animals name:- cat ,cackroach etc.

Places name :- street ,banglore etc.

Objects name :- table , wire etc.

Substances name:- gold ,glass etc.

Qualities name:- Happines, sorrow etc.

Measures name :- inch ,pound etc.

Noun को सात प्रकार से बाँटा जा सकता है -

1. Proper Noun (व्यक्तिवाचक)
 2. Common Noun (जातिवाचक)
 3. Collective Noun (समूहवाचक)
 4. Material Noun (द्रव्यवाचक)
 5. Abstract Noun (भाववाचक)
 6. Countable noun(संख्यावाचक)
 7. Non-countable noun (असंख्यावाक)
- Proper Noun, common noun ,collective noun and material noun इन्हें Concrete noun भी कहते हैं ये abstract noun के opposite (विपरीत) होते हैं।
 - concrete nouns ऐसी वस्तुओं के नाम होते हैं जिनका physical existence होता है।

RULES TO FIND A NOUN

(Noun की पहचान) :-

- By putting who,whom,what with work done(किसने काम किया) we find out noun.
जैसे : sumit is playing football. (सुमित फुटबॉल खेल रहा है) अब आप खुद से सवाल करके noun पहचान सकते हैं इस वाक्य में **जैसे:-** who is playing? (कोन खेल रहा है) = सुमित (sumit)
what is playing?(क्या खेल रहा है ?)=football
यहाँ sumit and football दोनों noun हैं।
- जिन वाक्यों के अंत: में नीचे दिये गये word जुड़े होंगे वो noun होंगे **जैसे :-**
Ment = mangement , agreement
tion = station , vacation , foundation
th = growth
er = teacher
or = doctor
ty = honesty

ry = bravery
ce = advice
ledge = knowledge
dom = freedom ,wisdom
ics = physics
ship = friendship
sion = pension

(1) Proper noun

Proper noun से हमारा तात्पर्य किसी विशेष (specific) व्यक्ति, वस्तु तथा स्थान के नाम से होता है।

जैसे: Mohan, Jaipur, Radha etc.

(a) Mohan is my friend.

(b) I live in Delhi.

(c) we are planning to go to Pizza Hut.

(d) There are many important documents at The Library of congress.

उपर दिए गये Ex(a) में mohan एक boy का proper name दिया हुआ है Ex(b) में delhi एक proper city का name है Ex(c) pizza hut एक proper restaurant का name दिया है और Ex(d) में The Library of congress एक library का proper name है इसलिए mohan ,delhi ,pizza hut, The Library of congress यहाँ proper noun हैं।

(2) Common noun

जिस Noun (संज्ञा) से एक वर्ग अथवा जाति के व्यक्ति या वस्तु के नाम का बोध हो, उसे Common Noun (जातिवाचक संज्ञा) कहते हैं। जैसे- boy, girl, Village ,city etc.

(a) According to the Girl, the nearest town is very far.

(b) The Girls are going to the nearest village.

जैसा कि हम ऊपर दिए गये examples में देख सकते हैं यहाँ हम किसी विशेष girl की बात नहीं कर रहे हैं अगर कोई विशेष girl की बात की गयी होती तो यहाँ उस girl का girl की जगह proper name दिया होता जैसे - sita, priya आदि, यहाँ girls जाति की बात हो रही है जो कोई भी girls हो सकती है इसलिए यहाँ 'girl' common noun है।

नीच दी गयी table से आप common noun और proper noun को और अच्छे से समझ सकते हैं -

Common Noun	Proper Noun
boy	Ram
girl	rita
bridge	mahatma gandhi bridge
city	kanpur

book	war and peace
tower	eifel tower
jeans	levis

(3) Collective noun

collective noun एक ही प्रकार के लोगो ,जानवरों , वस्तुओं आदि के समूह (group) के नाम होते हैं।

A collective noun is a word used for a group of people ,animals and things etc.

examples :- Team, Committee, Army etc Other.

Example of Collective Noun :-

A Pride of Lions

A Flock of birds

A herd of cattle

A class of student

सामान्यतः Collective Noun का प्रयोग Singular में होता है। इनका प्रयोग Plural में तभी किया जाता है

जब मतभेद दर्शाया जाए या फिर प्रत्येक सदस्य के बारे में कुछ कहा जाए।

(a) The jury is deciding the matter.

(b) The flock of geese spends most of its time in the pasture

(c) The team are divided over the issue of captainship. यहाँ टीम एक लोगो के group का नाम है जो divide (अलग) हो गया है या group के प्रत्येक सदस्य की राय (opinion) अलग-अलग है इसलिए इस वाक्य में 'team' plural होगा।

(d) The audience have taken their seats.

यहाँ audience में प्रत्येक सदस्य (individual) की बात हो रही है इसलिए यहाँ 'audience' plural है।

(4) Material noun

Material noun ऐसी वस्तुओं के नाम को कहते हैं जो metal और substance (प्रदार्थ) हो और उनसे दूसरी वस्तुयें बनाई जा सकती हो।

जैसे: Gold, Silver, Zink, wood etc.

(a) The necklace is made of gold.

(b) He got his furniture made of teak wood.

Material Nouns, Countable नहीं होते हैं अर्थात् इनकी गिनती नहीं की जा सकती है। इन्हें मापा या तौला जा सकता है। इनके साथ सामान्यतः Singular verb का प्रयोग किया जाता है एवं इनके पहले Article का प्रयोग नहीं किया जाता है।

(5) Abstract noun

Abstract Noun, ऐसे गुण, भाव, क्रिया एवं अवस्था को व्यक्त करता है जिन्हें छूआ नहीं जा सकता है, देखा नहीं जा सकता है, बल्कि केवल महसूस किया जा सकता है।



Chapter - 9

One Word Substitution

S. No.	Statement	OWS with Hindi meaning
1.	Words inscribed on the tomb	Epitaph / समाधि- लेख
2.	A Fear of closed / dark places	Claustrophobia / संवृत- स्थान - भीति
3.	Something no longer in use	Obsolete / अप्रचलित
4.	A remedy for all diseases	Panacea / रामबाण
5.	One who is indifferent to pleasure or pain	Stoic / वैरागी
6.	One who is difficult to please	Fastidious / तुलुक मिजाज
7.	One who is concerned with the welfare of other	Altruist / परोपकारी
8.	The thing that can be easily broken	Brittle / नाजुक
9.	An animal that lives in a group	Gregarious / झुंड में रहने वाला
10.	That which cannot be easily read	Illegible / पठनीय
11.	Incapable of being corrected	Incorrigible / असुधार्य
12.	That which cannot be avoided	Inevitable / अतिनिष्ठावान
13.	A method which never fails	Infallible / अचूक
14.	One who hates women	Misogynist / महिलाद्वेषी
15.	A state where no law and order exists	Anarchy / अराजकता
16.	A study of ancient things	Archaeology / पुरातत्व विज्ञान
17.	A lover of books	Bibliophile / पुस्तक प्रेमी
18.	One who eats human flesh	Cannibal / नरभक्षी
19.	People living at the same time	Contemporaries / समकालीन
20.	To free completely from blame	Exonerate / निर्दोष ठहराना
21.	A speech made without preparation	Extempore / बिना तैयारी के करना या बोलना
22.	The act of killing whole group of people, especially whole race	Genocide / जनसंहार
23.	Easily duped or fooled	Gullible / भोला - भाला

Dear Aspirants, here are the our results in differents exams

(Proof Video Link) 

RAS PRE. 2021 - <https://shorturl.at/qBJ18> (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - <https://shorturl.at/tGHRT> (96 प्रश्न , 150 में से)

UP Police Constable 2024 - <http://surl.li/rbfyn> (98 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - <https://youtu.be/gPqDNlc6UR0>

Rajasthan CET 12th Level - <https://youtu.be/oCa-CoTFu4A>

RPSC EO / RO - <https://youtu.be/b9PKjl4nSxE>

VDO PRE. - <https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856Wl8&t=202s>

Patwari - <https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s>

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - <https://youtu.be/2gz2fJyt6vI>

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp <https://wa.link/I5oubd> 1 web.- <https://shorturl.at/9NIFM>





RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2 nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2 nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1 st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2 nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2 nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1 st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21 नवम्बर 2021 (1 st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1 st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1 st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1 st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.





whatsapp <https://wa.link/I5oubd> 2 web.- <https://shorturl.at/9NIFM>




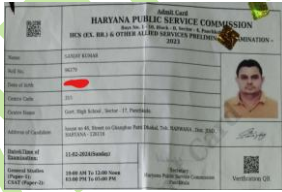
Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
	Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati	SSC CHSL tier- 1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	Mahender Singh	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumang arh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumang arh
N.A	Mangilal Siyag	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumang arh
N.A	Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawa la
N.A	LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALI WAL	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	Ramchandra Pediwal	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village- gudaram singh, teshil-sojat
N.A	OM PARKSH	RAS	N.A.	Teshil- mundwa Dis- Nagaur
N.A	Sikha Yadav	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
	Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel	Rac batalian	729141135	Dis.- Bhilwara
N.A	mukesh kumar bairwa s/o ram avtar	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUN U
N.A	Rinku	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	Rupnarayan Gurjar	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

	Jagdish Jogi	EO/RO Marks)	(84 N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379 	Jind (Haryana)

And many others.....

Click on the below link to purchase notes

WhatsApp करें - <https://wa.link/I5oubd>

Online Order करें - <https://shorturl.at/9NIFM>

Call करें - **9887809083**